



Mrs Laxmi Akash Singh

12 Sep 1996

08:15 AM

Nasik

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121232101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 12/09/1996
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 08:15:00 घंटे
इष्ट _____: 04:44:01 घटी
स्थान _____: Nasik
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 20:00:00 उत्तर
रेखांश _____: 73:52:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:34:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 07:40:28 घंटे
वेलान्तर _____: 00:03:45 घंटे
साम्पातिक काल _____: 07:06:02 घंटे
सूर्योदय _____: 06:21:23 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:39:45 घंटे
दिनमान _____: 12:18:22 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 25:48:28 सिंह
लग्न के अंश _____: 21:41:24 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: पू०फाल्गुनी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: साध्य
करण _____: चतुष्पाद
गण _____: मनुष्य
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: मो-मोहिनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE
Upanagar, Nashik - 422006
9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956
flairknowledge@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	भाद्रपद	21
पंजाबी	संवत : 2053	भाद्रपद	28
बंगाली	सन् : 1403	भाद्रपद	27
तमिल	संवत : 2053	आवनी	28
केरल	कोल्लम : 1172	चिंगम	27
नेपाली	संवत : 2053	भाद्रपद	28
चैत्रादि	संवत : 2053	भाद्रपद	कृष्ण 15
कार्तिकादि	संवत : 2053	श्रावण	कृष्ण 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 15
तिथि समाप्ति काल _____ : 28:37:16
जन्म तिथि _____ : 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 28:41:07 घंटे
जन्म योग _____ : पू०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : साध्य
योग समाप्ति काल _____ : 28:44:24 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : चतुष्पाद
करण समाप्ति काल _____ : 15:43:51 घंटे
जन्म करण _____ : चतुष्पाद
भयात _____ : 14:59:09
भभोग _____ : 66:04:25
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 15 वर्ष 5 मा 24 दि

घात चक्र

मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

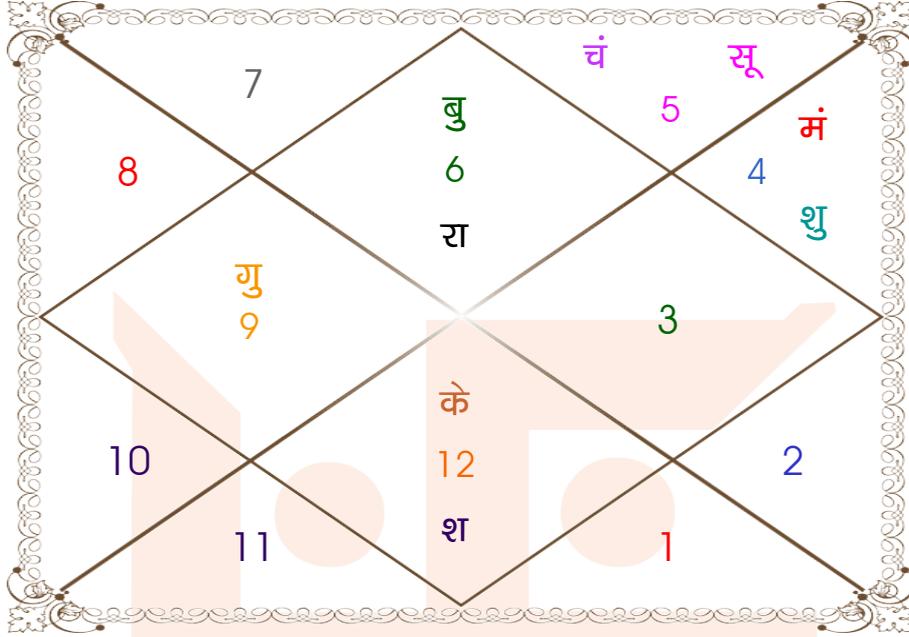
Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

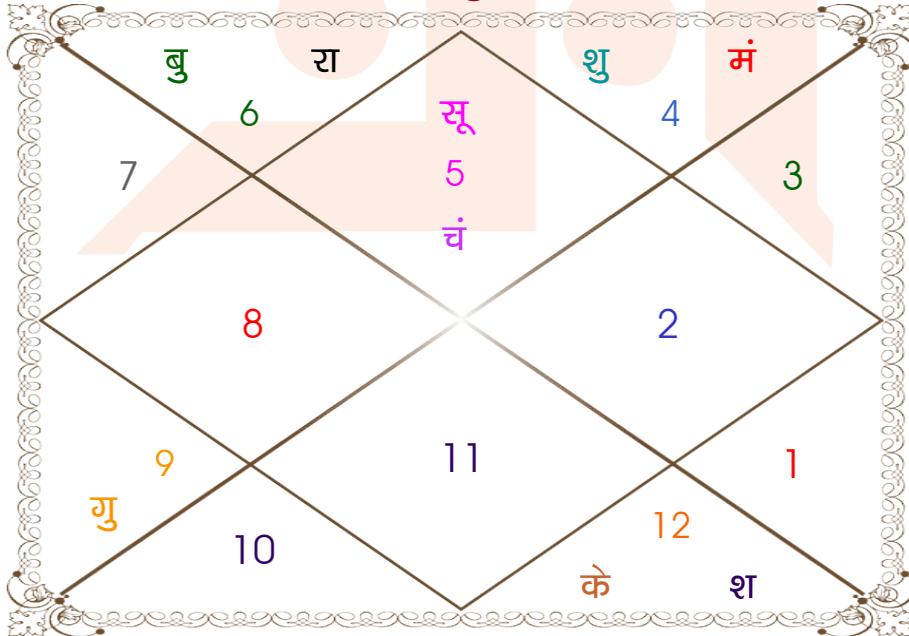
flairknowledge@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के श			
			शु मं
			चं सू
गु			रा ल बु

लग्न कुंडली

		के श
शु मं		
सू चं	ल बु	गु

विंशोत्तरी
शुक्र 15वर्ष 5मा 24दि
शुक्र

12/09/1996

09/03/2112

शुक्र	08/03/2012
सूर्य	08/03/2018
चन्द्र	08/03/2028
मंगल	08/03/2035
राहु	08/03/2053
गुरु	08/03/2069
शनि	08/03/2088
बुध	09/03/2105
केतु	09/03/2112

योगिनी

उल्का 4वर्ष 7मा 22दि
भामरी

06/05/2022

06/05/2026

भामरी	15/10/2022
भद्रिका	06/05/2023
उल्का	05/01/2024
सिद्धा	15/10/2024
संकटा	04/09/2025
मंगला	15/10/2025
पिंगला	04/01/2026
धान्या	06/05/2026

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

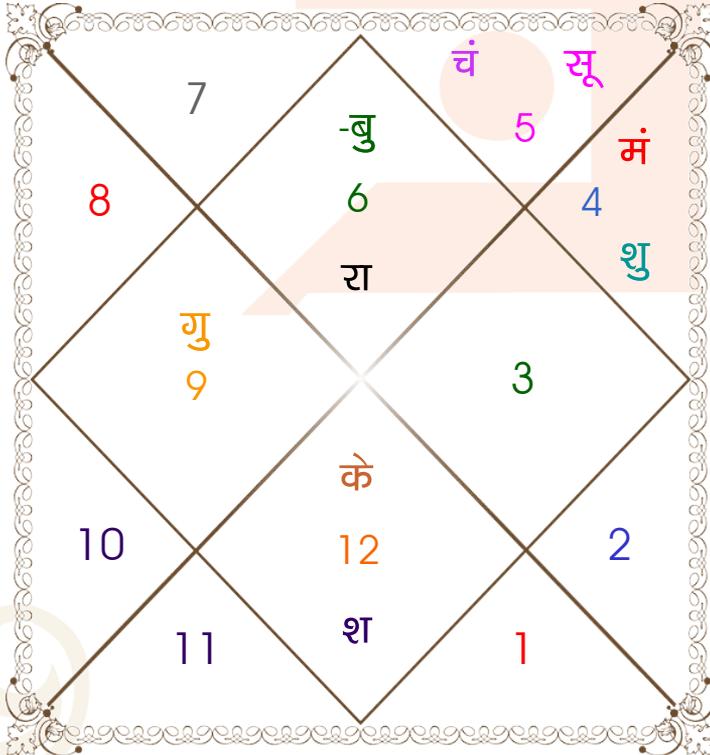
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	21:41:24	337:19:16	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	---
सूर्य			सिंह	25:48:28	00:58:24	पूर्वाषाढा	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	स्वराशि
चंद्र			सिंह	16:20:36	12:04:03	पूर्वाषाढा	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
मंगल			कर्क	07:36:56	00:37:29	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	नीच राशि
बुध	व	अ	कन्या	06:25:20	00:48:59	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	उच्च राशि
गुरु			धनु	14:07:22	00:01:37	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
शुक्र			कर्क	11:27:26	01:05:07	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	चंद्र	शत्रु राशि
शनि	व		मीन	11:16:42	00:04:25	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	सम राशि
राहु	व		कन्या	14:12:04	00:02:08	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	14:12:04	00:02:08	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		मक	07:08:42	00:01:19	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
नेप	व		मक	01:19:34	00:00:46	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	---
प्लूटो			वृश्चि	06:49:03	00:01:05	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	---
दशम भाव			मिथु	21:23:56	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	गुरु	--

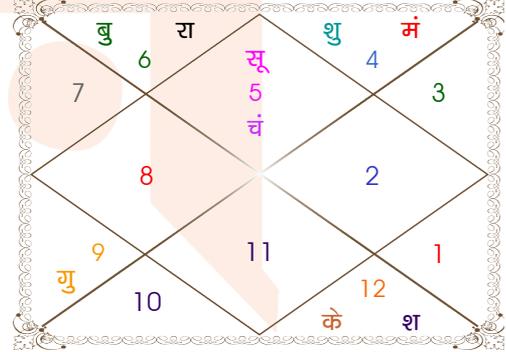
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:42

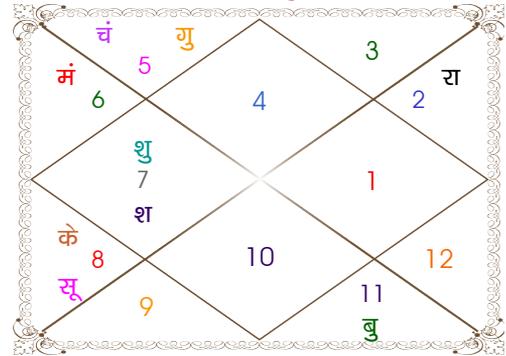
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 06:38:30	कन्या 21:41:24
2	तुला 06:38:30	तुला 21:35:35
3	वृश्चिक 06:32:40	वृश्चिक 21:29:45
4	धनु 06:26:51	धनु 21:23:56
5	मकर 06:26:51	मकर 21:29:45
6	कुम्भ 06:32:40	कुम्भ 21:35:35
7	मीन 06:38:30	मीन 21:41:24
8	मेष 06:38:30	मेष 21:35:35
9	वृष 06:32:40	वृष 21:29:45
10	मिथुन 06:26:51	मिथुन 21:23:56
11	कर्क 06:26:51	कर्क 21:29:45
12	सिंह 06:32:40	सिंह 21:35:35

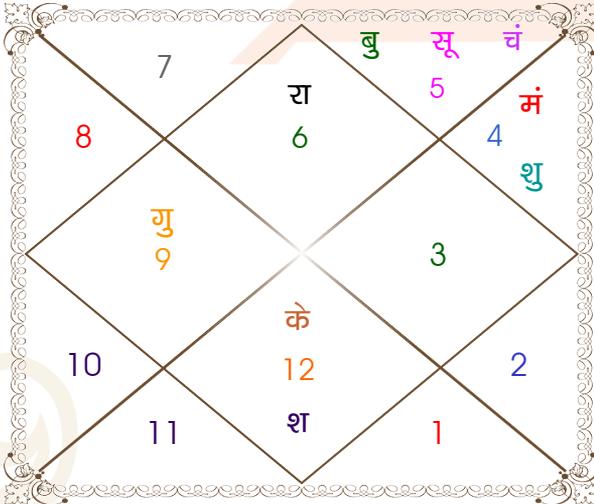
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	21:41:24
2	तुला	21:05:05
3	वृश्चिक	21:04:53
4	धनु	21:23:56
5	मकर	22:14:13
6	कुम्भ	22:54:36
7	मीन	21:41:24
8	मेष	21:05:05
9	वृष	21:04:53
10	मिथुन	21:23:56
11	कर्क	22:14:13
12	सिंह	22:54:36

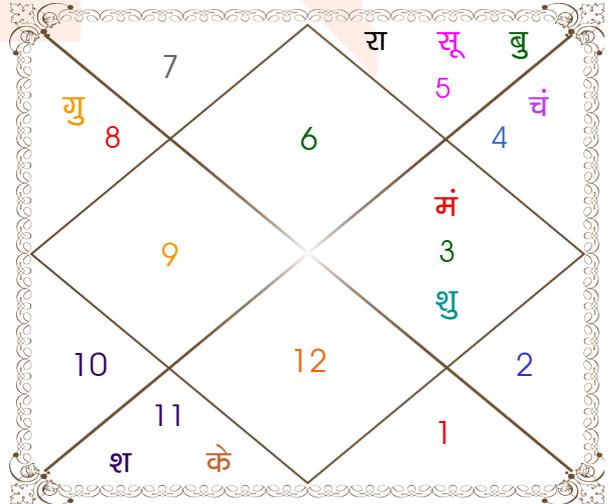
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

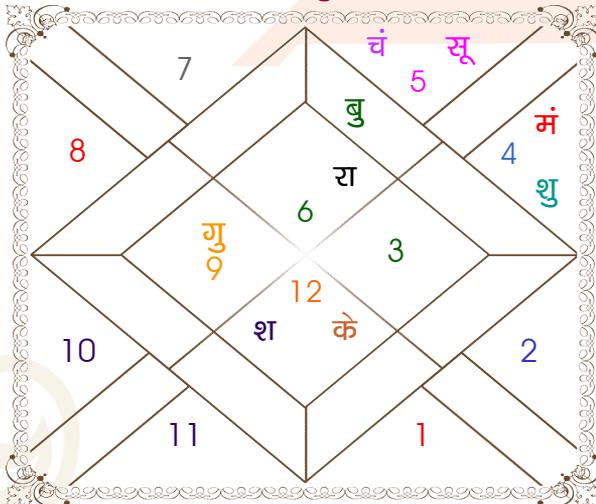
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	आत्मा	पितृ	मृत	स्वस्थ	शयन	3.68	27 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	युवा	मुदित	कौतुक	3.83	32 %
मंगल	ज्ञाति	भातृ	वृद्ध	भीत	भोजन	0.75	73 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	वृद्ध	विकल	भोजन	0.00	45 %
गुरु	भातृ	धन	युवा	स्वस्थ	गमन	1.22	58 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	वृद्ध	खल	भोजन	3.36	47 %
शनि	पुत्र	आयु	वृद्ध	शान्त	गमन	1.29	52 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	स्वस्थ	शयन	0.00	49 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	स्वस्थ	नेत्रपाणि	0.00	49 %
कुल						14.14	

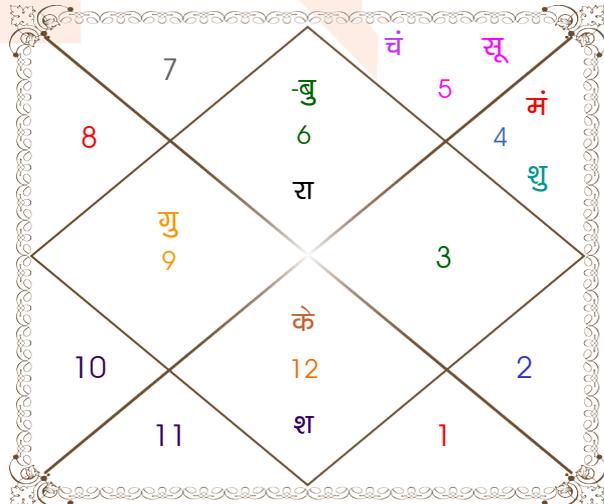
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 15 वर्ष 5 मास 24 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
12/09/1996	08/03/2012	08/03/2018	08/03/2028	08/03/2035
08/03/2012	08/03/2018	08/03/2028	08/03/2035	08/03/2053
00/00/0000	सूर्य 25/06/2012	चंद्र 07/01/2019	मंगल 04/08/2028	राहु 19/11/2037
12/09/1996	चंद्र 25/12/2012	मंगल 08/08/2019	राहु 22/08/2029	गुरु 13/04/2040
चंद्र 08/03/1998	मंगल 02/05/2013	राहु 05/02/2021	गुरु 29/07/2030	शनि 18/02/2043
मंगल 08/05/1999	राहु 26/03/2014	गुरु 07/06/2022	शनि 07/09/2031	बुध 07/09/2045
राहु 08/05/2002	गुरु 13/01/2015	शनि 07/01/2024	बुध 03/09/2032	केतु 25/09/2046
गुरु 06/01/2005	शनि 26/12/2015	बुध 07/06/2025	केतु 30/01/2033	शुक्र 25/09/2049
शनि 08/03/2008	बुध 31/10/2016	केतु 06/01/2026	शुक्र 02/04/2034	सूर्य 20/08/2050
बुध 07/01/2011	केतु 08/03/2017	शुक्र 07/09/2027	सूर्य 07/08/2034	चंद्र 18/02/2052
केतु 08/03/2012	शुक्र 08/03/2018	सूर्य 08/03/2028	चंद्र 08/03/2035	मंगल 08/03/2053

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
08/03/2053	08/03/2069	08/03/2088	09/03/2105	09/03/2112
08/03/2069	08/03/2088	09/03/2105	09/03/2112	00/00/0000
गुरु 26/04/2055	शनि 11/03/2072	बुध 04/08/2090	केतु 05/08/2105	शुक्र 09/07/2115
शनि 06/11/2057	बुध 19/11/2074	केतु 02/08/2091	शुक्र 05/10/2106	सूर्य 08/07/2116
बुध 12/02/2060	केतु 29/12/2075	शुक्र 01/06/2094	सूर्य 10/02/2107	चंद्र 13/09/2116
केतु 18/01/2061	शुक्र 27/02/2079	सूर्य 08/04/2095	चंद्र 11/09/2107	00/00/0000
शुक्र 19/09/2063	सूर्य 09/02/2080	चंद्र 06/09/2096	मंगल 07/02/2108	00/00/0000
सूर्य 07/07/2064	चंद्र 10/09/2081	मंगल 04/09/2097	राहु 25/02/2109	00/00/0000
चंद्र 06/11/2065	मंगल 19/10/2082	राहु 24/03/2100	गुरु 01/02/2110	00/00/0000
मंगल 13/10/2066	राहु 25/08/2085	गुरु 30/06/2102	शनि 12/03/2111	00/00/0000
राहु 08/03/2069	गुरु 08/03/2088	शनि 09/03/2105	बुध 09/03/2112	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 15 वर्ष 5 मा 17 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र 06/01/2026 07/09/2027	चंद्र - सूर्य 07/09/2027 08/03/2028	मंगल - मंगल 08/03/2028 04/08/2028	मंगल - राहु 04/08/2028 22/08/2029	मंगल - गुरु 22/08/2029 29/07/2030
शुक्र 18/04/2026 सूर्य 18/05/2026 चंद्र 08/07/2026 मंगल 12/08/2026 राहु 12/11/2026 गुरु 01/02/2027 शनि 08/05/2027 बुध 03/08/2027 केतु 07/09/2027	सूर्य 16/09/2027 चंद्र 01/10/2027 मंगल 12/10/2027 राहु 08/11/2027 गुरु 03/12/2027 शनि 01/01/2028 बुध 27/01/2028 केतु 06/02/2028 शुक्र 08/03/2028	मंगल 16/03/2028 राहु 08/04/2028 गुरु 28/04/2028 शनि 21/05/2028 बुध 11/06/2028 केतु 20/06/2028 शुक्र 15/07/2028 सूर्य 22/07/2028 चंद्र 04/08/2028	राहु 30/09/2028 गुरु 20/11/2028 शनि 20/01/2029 बुध 16/03/2029 केतु 07/04/2029 शुक्र 10/06/2029 सूर्य 29/06/2029 चंद्र 31/07/2029 मंगल 22/08/2029	गुरु 07/10/2029 शनि 30/11/2029 बुध 17/01/2030 केतु 06/02/2030 शुक्र 04/04/2030 सूर्य 21/04/2030 चंद्र 19/05/2030 मंगल 08/06/2030 राहु 29/07/2030
मंगल - शनि 29/07/2030 07/09/2031	मंगल - बुध 07/09/2031 03/09/2032	मंगल - केतु 03/09/2032 30/01/2033	मंगल - शुक्र 30/01/2033 02/04/2034	मंगल - सूर्य 02/04/2034 07/08/2034
शनि 01/10/2030 बुध 28/11/2030 केतु 21/12/2030 शुक्र 27/02/2031 सूर्य 19/03/2031 चंद्र 22/04/2031 मंगल 15/05/2031 राहु 15/07/2031 गुरु 07/09/2031	बुध 28/10/2031 केतु 19/11/2031 शुक्र 18/01/2032 सूर्य 05/02/2032 चंद्र 06/03/2032 मंगल 27/03/2032 राहु 21/05/2032 गुरु 08/07/2032 शनि 03/09/2032	केतु 12/09/2032 शुक्र 07/10/2032 सूर्य 14/10/2032 चंद्र 27/10/2032 मंगल 04/11/2032 राहु 27/11/2032 गुरु 17/12/2032 शनि 09/01/2033 बुध 30/01/2033	शुक्र 11/04/2033 सूर्य 03/05/2033 चंद्र 07/06/2033 मंगल 02/07/2033 राहु 04/09/2033 गुरु 31/10/2033 शनि 06/01/2034 बुध 08/03/2034 केतु 02/04/2034	सूर्य 08/04/2034 चंद्र 19/04/2034 मंगल 26/04/2034 राहु 15/05/2034 गुरु 01/06/2034 शनि 21/06/2034 बुध 10/07/2034 केतु 17/07/2034 शुक्र 07/08/2034
मंगल - चंद्र 07/08/2034 08/03/2035	राहु - राहु 08/03/2035 19/11/2037	राहु - गुरु 19/11/2037 13/04/2040	राहु - शनि 13/04/2040 18/02/2043	राहु - बुध 18/02/2043 07/09/2045
चंद्र 25/08/2034 मंगल 07/09/2034 राहु 09/10/2034 गुरु 06/11/2034 शनि 10/12/2034 बुध 09/01/2035 केतु 21/01/2035 शुक्र 26/02/2035 सूर्य 08/03/2035	राहु 03/08/2035 गुरु 13/12/2035 शनि 17/05/2036 बुध 04/10/2036 केतु 30/11/2036 शुक्र 14/05/2037 सूर्य 02/07/2037 चंद्र 22/09/2037 मंगल 19/11/2037	गुरु 15/03/2038 शनि 01/08/2038 बुध 03/12/2038 केतु 24/01/2039 शुक्र 19/06/2039 सूर्य 02/08/2039 चंद्र 14/10/2039 मंगल 04/12/2039 राहु 13/04/2040	शनि 25/09/2040 बुध 19/02/2041 केतु 21/04/2041 शुक्र 12/10/2041 सूर्य 03/12/2041 चंद्र 28/02/2042 मंगल 29/04/2042 राहु 02/10/2042 गुरु 18/02/2043	बुध 30/06/2043 केतु 23/08/2043 शुक्र 26/01/2044 सूर्य 12/03/2044 चंद्र 29/05/2044 मंगल 22/07/2044 राहु 09/12/2044 गुरु 12/04/2045 शनि 07/09/2045

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
07/09/2045	25/09/2046	25/09/2049	20/08/2050	18/02/2052
25/09/2046	25/09/2049	20/08/2050	18/02/2052	08/03/2053
केतु 29/09/2045	शुक्र 27/03/2047	सूर्य 11/10/2049	चंद्र 04/10/2050	मंगल 12/03/2052
शुक्र 02/12/2045	सूर्य 20/05/2047	चंद्र 08/11/2049	मंगल 05/11/2050	राहु 08/05/2052
सूर्य 21/12/2045	चंद्र 20/08/2047	मंगल 27/11/2049	राहु 26/01/2051	गुरु 28/06/2052
चंद्र 22/01/2046	मंगल 23/10/2047	राहु 15/01/2050	गुरु 09/04/2051	शनि 28/08/2052
मंगल 13/02/2046	राहु 04/04/2048	गुरु 28/02/2050	शनि 05/07/2051	बुध 22/10/2052
राहु 12/04/2046	गुरु 28/08/2048	शनि 21/04/2050	बुध 21/09/2051	केतु 13/11/2052
गुरु 02/06/2046	शनि 18/02/2049	बुध 07/06/2050	केतु 23/10/2051	शुक्र 16/01/2053
शनि 02/08/2046	बुध 23/07/2049	केतु 26/06/2050	शुक्र 22/01/2052	सूर्य 04/02/2053
बुध 25/09/2046	केतु 25/09/2049	शुक्र 20/08/2050	सूर्य 18/02/2052	चंद्र 08/03/2053
गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
08/03/2053	26/04/2055	06/11/2057	12/02/2060	18/01/2061
26/04/2055	06/11/2057	12/02/2060	18/01/2061	19/09/2063
गुरु 20/06/2053	शनि 20/09/2055	बुध 04/03/2058	केतु 03/03/2060	शुक्र 30/06/2061
शनि 21/10/2053	बुध 29/01/2056	केतु 21/04/2058	शुक्र 29/04/2060	सूर्य 17/08/2061
बुध 09/02/2054	केतु 23/03/2056	शुक्र 06/09/2058	सूर्य 16/05/2060	चंद्र 06/11/2061
केतु 26/03/2054	शुक्र 24/08/2056	सूर्य 17/10/2058	चंद्र 13/06/2060	मंगल 02/01/2062
शुक्र 03/08/2054	सूर्य 09/10/2056	चंद्र 25/12/2058	मंगल 03/07/2060	राहु 28/05/2062
सूर्य 11/09/2054	चंद्र 25/12/2056	मंगल 12/02/2059	राहु 24/08/2060	गुरु 05/10/2062
चंद्र 15/11/2054	मंगल 17/02/2057	राहु 16/06/2059	गुरु 08/10/2060	शनि 08/03/2063
मंगल 30/12/2054	राहु 06/07/2057	गुरु 04/10/2059	शनि 01/12/2060	बुध 24/07/2063
राहु 26/04/2055	गुरु 06/11/2057	शनि 12/02/2060	बुध 18/01/2061	केतु 19/09/2063
गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि
19/09/2063	07/07/2064	06/11/2065	13/10/2066	08/03/2069
07/07/2064	06/11/2065	13/10/2066	08/03/2069	11/03/2072
सूर्य 04/10/2063	चंद्र 17/08/2064	मंगल 26/11/2065	राहु 22/02/2067	शनि 29/08/2069
चंद्र 28/10/2063	मंगल 14/09/2064	राहु 16/01/2066	गुरु 19/06/2067	बुध 01/02/2070
मंगल 14/11/2063	राहु 26/11/2064	गुरु 03/03/2066	शनि 04/11/2067	केतु 06/04/2070
राहु 28/12/2063	गुरु 30/01/2065	शनि 26/04/2066	बुध 08/03/2068	शुक्र 06/10/2070
गुरु 05/02/2064	शनि 18/04/2065	बुध 13/06/2066	केतु 28/04/2068	सूर्य 30/11/2070
शनि 22/03/2064	बुध 26/06/2065	केतु 03/07/2066	शुक्र 21/09/2068	चंद्र 01/03/2071
बुध 03/05/2064	केतु 24/07/2065	शुक्र 29/08/2066	सूर्य 04/11/2068	मंगल 04/05/2071
केतु 20/05/2064	शुक्र 13/10/2065	सूर्य 15/09/2066	चंद्र 16/01/2069	राहु 16/10/2071
शुक्र 07/07/2064	सूर्य 06/11/2065	चंद्र 13/10/2066	मंगल 08/03/2069	गुरु 11/03/2072

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 1
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

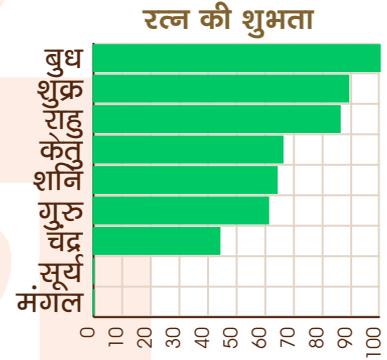
flairknowledge@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	89%	धनार्जन, भाग्योदय, धन
गोमेद	राहु	86%	स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	66%	दम्पति, सुख
नीलम	शनि	64%	दम्पति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	61%	सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	44%	व्यय, हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय
मूंगा	मंगल	0%	हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	08/03/2012	0%	19%	0%	100%	61%	100%	70%	93%	72%
सूर्य	08/03/2018	12%	53%	0%	100%	67%	77%	52%	74%	53%
चंद्र	08/03/2028	0%	59%	0%	100%	61%	89%	64%	74%	53%
मंगल	08/03/2035	0%	53%	6%	100%	67%	89%	64%	74%	72%
राहु	08/03/2053	0%	19%	0%	100%	61%	95%	70%	99%	53%
गुरु	08/03/2069	0%	53%	0%	100%	73%	77%	64%	86%	66%
शनि	08/03/2088	0%	19%	0%	100%	61%	95%	77%	93%	53%
बुध	09/03/2105	0%	19%	0%	100%	61%	95%	64%	86%	66%
केतु	09/03/2112	0%	19%	0%	100%	61%	95%	52%	74%	78%

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

गोमेद आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, नीलम एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

माणिक्य व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए हैं। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराये। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी मानसिक परेशानियों में कमी होगी। यह रत्न आपको सुख शांति, पारिवारिक सौहार्द और भूमि-भवन के विषयों में लाभ देगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको सरकार व सगे संबंधियों से सुख-सहयोग की स्थिति बनाए रखेगा। तथा यह रत्न आपको परदेश का सुख देगा तथा आपके मातृ सुख में वृद्धि करेगा। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने से आपको भौतिक सुख-सुविधाओं का सुख भोगने के प्रयाप्त अवसर प्राप्त होंगे। यह रत्न आपकी संतोष भावना को बढ़ाएगा। आपको सेवकों का सुख प्राप्त होगा। शैक्षिक पक्ष से भी इस रत्न की शुभता आपके साथ बनी हुई है।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

नीलम

आपकी कुंडली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके ग्रहस्थ जीवन को सुखमय बनाये रखने का प्रयास करेगा। विवाह के बाद भाग्योदय करेगा। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाये रखने में सहयोग करेगी। आपको ठेकेदारी, कोयला, लोहा, खदानों आदि से जुड़े कामों से लाभ मिलेगा। रत्न की शुभता से आपको किसी विदेशी काम या विदेशी माल में एजेन्ट का काम करने से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपत्ति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण से आप बुद्धिमानी से संपत्ति की प्राप्ति करेंगे। कार्यक्षेत्र में वरिष्ठजनों का सहयोग प्राप्त होगा। यह रत्न आपको महत्वाकांक्षी और शुभकर्म करने वाला बनायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आप यशस्वी और अपने समाज के माननीय व्यक्तियों में गिने जायेंगे। पुखराज आपको उद्यमी कार्यरत और उद्योगी बनायेगा। आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। आपको राजकीय या सरकार द्वारा प्रदत्त घर की प्राप्ति होगी। आप गुरु भक्ति को महत्व देंगे। माता का सुख-स्नेह मिलेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु चतुर्थेश का पुखराज रत्न धारण करने से आपको सुख-सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। पुखराज रत्न

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

आपको धार्मिक और संस्कारी जीवन साथी दे सकता है। यह रत्न चतुर्थ भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण आपको संपत्ति व माता सुख, विद्या, बुद्धि व संतान पक्ष को सुखी रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। गुरु रत्न पुखराज आपको धनी, भाग्य व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दिला सकता है। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर ८ रत्नी का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। सृजनात्मक कार्यों में आय प्राप्त के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ा सकते हैं। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आय प्राप्त के प्रयास असफल हो सकते हैं। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती हैं। मोती रत्न आपके व्यर्थों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। चंद्र का रत्न मोती धारण करने पर आपको धनार्जन एवं धन संचय करने में कष्ट की स्थिति आ सकती है। मोती रत्न आपकी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति को बाधित कर सकता है। यह रत्न आपकी व्यापारी कुशलता में भी कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके वैवाहिक जीवन को दुःखद कर सकता है। मोती रत्न धारण से आय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा और समाज से आपकी द्वेष भाव की स्थिति बन सकती है। मोती रत्न आपको प्रवास और गुप्त चिंताएं दे सकता है। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपमें संकल्प शक्ति की कमी हो सकती है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते हैं। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते हैं। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यों में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते हैं। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों से आय प्राप्त के अवसर दे सकता है। आपके बड़े भाई में अत्यधिक क्रोध भाव आ सकता है। आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है। मूंगा रत्न आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है। इस रत्न से संतान की पैदाइस में विलम्ब या गर्भपात जैसी स्थितियां भी आ सकती है। आपके बड़े भाई बहन वाद-विवाद में सम्मिलित हो सकते हैं। मूंगा रत्न आपको मित्रों से मतभेद और विरोध दे सकते हैं। इस रत्न को धारण करने पर आपके विरोधी प्रबल हो सकते हैं। आपको रोग, ऋण और शत्रुओं की अधिकता से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके कुटुंब में वाद-विवाद का कारण बन सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते हैं। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र

(08/03/2018 - 08/03/2028)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, पुखराज, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(08/03/2028 - 08/03/2035)

मंगल की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया, पुखराज, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(08/03/2035 - 08/03/2053)

राहु की दशा में आपका पन्ना, गोमेद व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(08/03/2053 - 08/03/2069)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, गोमेद व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

पुखराज, लहसुनिया, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(08/03/2069 - 08/03/2088)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा, गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(08/03/2088 - 09/03/2105)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु

(09/03/2105 - 09/03/2112)

केतु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ॐ रां राहुवे नमः

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

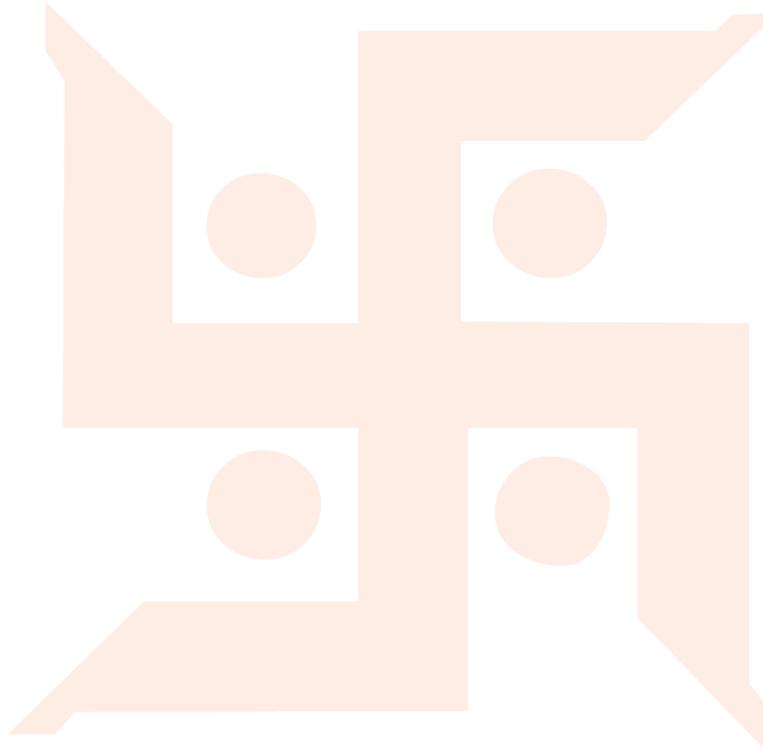
Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते हैं। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता है।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्टेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता है, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता है।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उत्तम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओं की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/09/1996-17/04/1998	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
सम
सम

क्षेत्र

दम्पति
अल्प बचत
व्यय
स्वास्थ्य
पराक्रम हानि

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष समाप्त हो जाता है। अतः ऐसे मंगल से आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा स्वभाव से व्ययशील होंगी। आपका अधिकांश व्यय अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही अधिक होगा। साथ ही आप अपने जीवन में समस्त भोग्य पदार्थों का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। आपके पति भी शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता के भाव की प्रबलता दृष्टि गोचर होगी लेकिन इससे आपके दाम्पत्य जीवन पर कोई विशेष अशुभ प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप आवश्यक सुख संसाधनों एवं भौतिक सुविधाओं से युक्त हो कर अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है परन्तु इसके प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यंत ही शान्त एवं सुखद वातावरण में होगा तथा इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न नहीं होंगी। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन भी मधुर संबंधों से युक्त रहकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त सभी प्रकार के भौतिक सुखों का आप उपभोग करेंगी तथा सांसारिक भोग्य पदार्थों से भी युक्त रहेंगी। आपका शत्रु वर्ग भी निर्बल रहेगा। अतः शत्रुओं से कोई विशेष परेशानी नहीं होगी।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करने वाली होंगी तथा भौतिक सुखों का पूर्ण रूप से जीवन में उपभोग करेंगी साथ ही आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय समय पर सिद्ध होते

रहेंगे। मंगल की तृतीय भाव पर दृष्टि से आप एक पराकमी महिला होंगी तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि होने से आपके शत्रु आपसे हमेशा परास्त रहेंगे एवं आपका विरोध करने या परेशानी उत्पन्न करने में असफल रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से पति का स्वास्थ्य तो अच्छा रहेगा परन्तु उनके स्वभाव में उग्रता या क्रोध का भाव हो सकता है। आपके आपसी संबंध भी मधुर एवं प्रगाढ़ रहेंगे तथा जीवन में एक दूसरे को सुख दुःख में पूर्ण सहयोग प्रदान करके सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसे मंगली युवक से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में नियमानुसार मांगलिक दोष समाप्त हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारंभ करेंगी तो सौभाग्य, धनवैभव, मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा से युक्त होकर समाज में पूर्ण रूप से यश अर्जित करने में सफल रहेंगी।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान पूर्ण सावधानी से करना चाहिए तथा जिस पुरुष की कुंडली में मंगल द्वादश भाव में ही स्थित हो उससे यदि अत्यावश्यक न हो तो विवाह नहीं करना चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से परिवार में व्ययाधिक्य होगा जिससे आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है। उससे दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक कटुता उत्पन्न होंगी। अन्य भावों में मंगल स्थित होने से अशुभ प्रभावों को समाप्त करेगा तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी अतः ऐसा मंगल मिलान में अच्छा रहता है। इस प्रकार सोच समझकर मिलान करने से आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न नहीं होंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का हास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

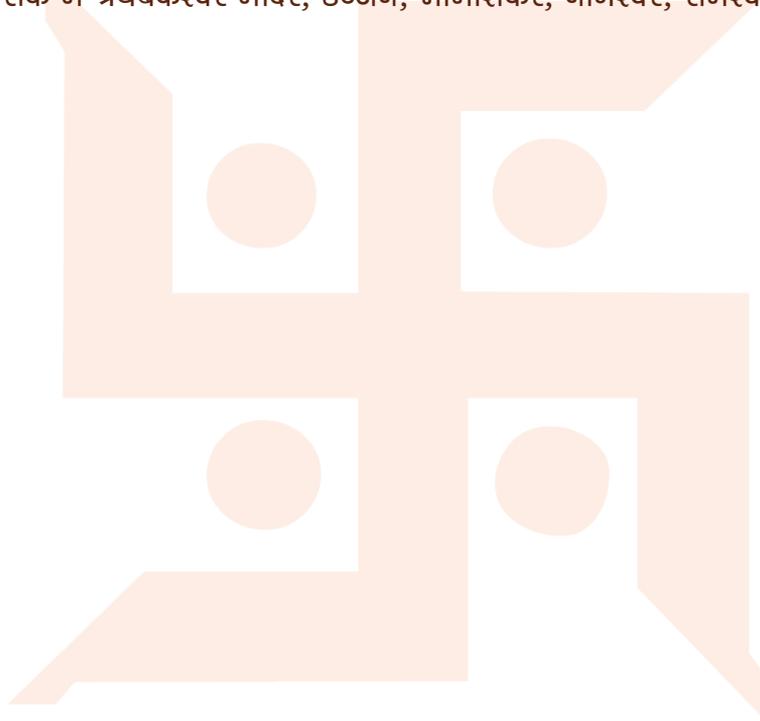
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुण्डली में बुध और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृत्ति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी

आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी आपको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान्, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। कन्या लग्न में उत्पन्न जातक सामान्यतया अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञान अर्जित करने में उनकी रुचि रहती है। सदगुणों से ये युक्त रहते हैं। ये जातक सौभाग्यशाली होते हैं तथा इनके सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही सम्पन्न हो जाते हैं फलतः धनैश्वर्य एवं सांसारिक तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ होते हैं। समाज में ये सम्मानित तथा प्रतिष्ठित रहते हैं। यद्यपि राजनीति में इनकी रुचि अल्प रहती है परन्तु अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा प्रशासनिक कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं तथा कठिन समस्याओं को सुलझाने में समर्थ रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा समस्त कार्य बुद्धि से संचालित होते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। अध्ययन के प्रति आपके हार्दिक रुचि होगी फलतः कला संगीत लेखन आदि कार्यों में आपको परिश्रमपूर्वक सफलता की प्राप्ति हो सकती है। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा अपने सांसारिक कार्यकलापों तथा अन्य कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा गूढ़ विषयों या समस्याओं का समाधान करने में दक्ष होंगी। आप कोई भी कार्य भावुकता के वश में होकर सम्पन्न नहीं करेंगी अपितु अत्यंत ही सोच समझकर अंतिम निर्णय लेंगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग सर्वदा प्रशस्त रहेंगे।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप भी आकर्षक होगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपके वाणी में मधुरता रहेगी तथा सर्वदा मधुर शब्दों का ही उपयोग करेंगी। समाज में आप प्रतिष्ठा तथा सम्मान अर्जित करेंगी तथा आपकी लोक प्रियता बनी रहेगी। संगीत में आप काफी रुचि लेंगी तथा एक गायिका के रूप में आपकी ख्याति हो सकती है। इसके अतिरिक्त भौतिक सुखों एवं धनवैभव से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

आपके स्वभाव में उदारता का भाव भी रहेगा तथा समय समय पर अन्य जनों की आप सेवा एवं सहायता कार्य करने में तत्पर होंगी श्रेष्ठ एवं अच्छे कार्यों को करने में आपके रुचि रहेगी तथा इन सब कार्यों से समाज में लोग आपको पूर्ण आदर प्रदान करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में आप समर्थ होंगी तथा वे आपसे प्रभावित रहेंगे। मित्र वर्ग में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा इनसे आप समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आप अपनी विद्वता बुद्धिमता

कार्यशीलता तथा चतुराई से जीवन में वांछित सुखों को अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ होंगी।



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE
Upanagar, Nashik - 422006
9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956
flairknowledge@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में तुला राशि उदित हुई है जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मधुर एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपने वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में भी सम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट की भी अनुभूति कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यों को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य उत्सवों की भी प्रिय होंगी तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन भी समय समय पर होते रहेंगे। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति भी अर्जित होगी। साथ ही अपने परिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से भी वांछित मात्रा में धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में सफल रहेंगी। परिवार को सुख सुविधा तथा प्रसन्नता प्रदान करना आपका मूल उद्देश्य रहेगा। समाज में आप एक आदरणीया महिला होंगी तथा सौभाग्य से अपना जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा बृहस्पति भी स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। यह स्थिति आपके लिए अत्यन्त शुभ फलदायक होगी। इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सुखों को प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में भी समर्थ होंगी। आधुनिक एवं भौतिक सुख संसाधन भी आपके पास होंगी। आप एक आदरणीय एवं प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध महिला से चल या अचल सम्पत्ति की भी प्राप्ति हो सकती है। इससे आपकी धनाढ्यता में वृद्धि होगी। अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल से आप वांछित धनसम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। अतः इससे पूंजीनिवेश करने से आप शीघ्र लाभ अर्जित करेंगी।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी। यह विस्तृत सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त होगा। आप किसी अच्छी कालोनी में निवास करेंगी तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तम वाहन सुख भी प्राप्त होगा तथा युवावस्था से ही आप इसका उपयोग प्रारम्भ करेंगी। इनकी संख्या एक से अधिक हो सकती है।

आपकी माता जी सुन्दर, शिक्षित तथा बुद्धिमान महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। परिवार के सदस्य भी उनके आज्ञाकारी होंगी तथा उन्हें वांछित मान सम्मान भी प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा एवं समानुसार उनसे आपको आर्थिक एवं नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। आपकी उन्नति में भी उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके आज्ञाकारी होंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे एवं सुख-दुख में उनका पूरा ध्यान रहेंगी।

आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील प्रवृत्ति के महिला होंगी तथा छोटी कक्षाओं से आप अच्छे अंको से परीक्षाएं उत्तीर्ण करेंगी। साथ ही स्नातक परीक्षा में भी आपको अच्छी सफलता मिलेगी एवं ससम्मान आप इसे उत्तीर्ण करेंगी। इससे आपके आत्म विश्वास में वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं सामाजिक जनों के मध्य आप सम्मान एवं आदर के पात्र मानी जाएंगी तथा वे प्रोत्साहित भी करेंगी। आप किसी व्यावसायिक प्रमाण पत्र की डिग्री भी अर्जित कर सकती है। इससे आपका भविष्य उज्ज्वल होगा तथा जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आप शीघ्रनिर्णय लेने तथा कठिन से कठिन समस्या को आसानी से सुलझाने में भी आप समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र आदि में आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। विज्ञान, गणित या ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रुचि होगी एवं इनके ज्ञानार्जन में आप पूर्ण परिश्रम करेंगी। इससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

शनि की राशि के पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी। आप मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा तथा नैतिकता का भाव बना रहेगा तथा एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः ऐसे सम्बन्धों की परिणति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्या सन्तति की अधिकता होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं चतुर होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनके आज्ञापालन में सदैव तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करना पसन्द करेंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा आपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली मानी जायेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां अर्जित करेंगी। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा उन्हें आधुनिक संस्थाओं में पढ़ाएंगी। अतः आपके परिश्रम एवं बच्चों की लगन से वे अपनी आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे अपने उत्तम कार्य-कलापों तथा व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सम्मान अर्जित करेंगे। अतः बच्चों की ओर से आप सुखी रहेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा केतु भी स्वराशि में सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति, आस्तिक एवं धनवान होता है तथा स्वराशिस्थ केतु के प्रभाव से वह तेजस्वी शिक्षित एवं सांसारिक कार्यों में दक्ष होता है एवं महत्वाकांक्षा के भाव की उसमें प्रबलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथापि तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। महत्वाकांक्षा की उनमें प्रबलता रहेगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को करने में चतुर होंगे एवं अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। स्वगृही केतु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता की भावना उनमें होगी तथा ईमानदारी से समाज एवं परिवार के प्रति कर्तव्यों का पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर एवं गौरवर्ण के आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना में पतलापन होगा लेकिन शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनका सौन्दर्य दर्शनीय होगा एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों के प्रति भी आकर्षण होगा एवं यत्न पूर्वक इनकी प्राप्ति में तत्पर होंगे साहित्य एवं कला में भी उनकी रुचि रहेगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा तथा समयानुसार आप स्वयं भी वर का चुनाव कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा स्नेह की भावना होगी जिससे सुख दुख में एक दूसरे का पूरा ध्यान रखेंगे। अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे परस्पर विश्वास एवं समानता का भाव बना रहेगा एवं संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

आपका विवाह किसी सामान्य परिवार से होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वह साधारण होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आप मधुर संबंध स्थापित करने में समर्थ होंगी तथा वे भी आपको यथोचित सहयोग तथा स्नेह प्रदान करेंगे जिससे आपस में सदभाव बना रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति का सेवा भाव बना रहेगा एवं स्वगृही केतु के प्रभाव से वह उनको अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे तथा सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को भी अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगे। अतः वह भी उन्हें वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी परन्तु साझेदार का बुद्धिमता पूर्वक चुनाव करना चाहिए तभी इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति हो सकते हैं।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने की इच्छुक होंगी तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगी जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्याख्याता, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासनिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा या ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहती हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकती हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगी परन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनो साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

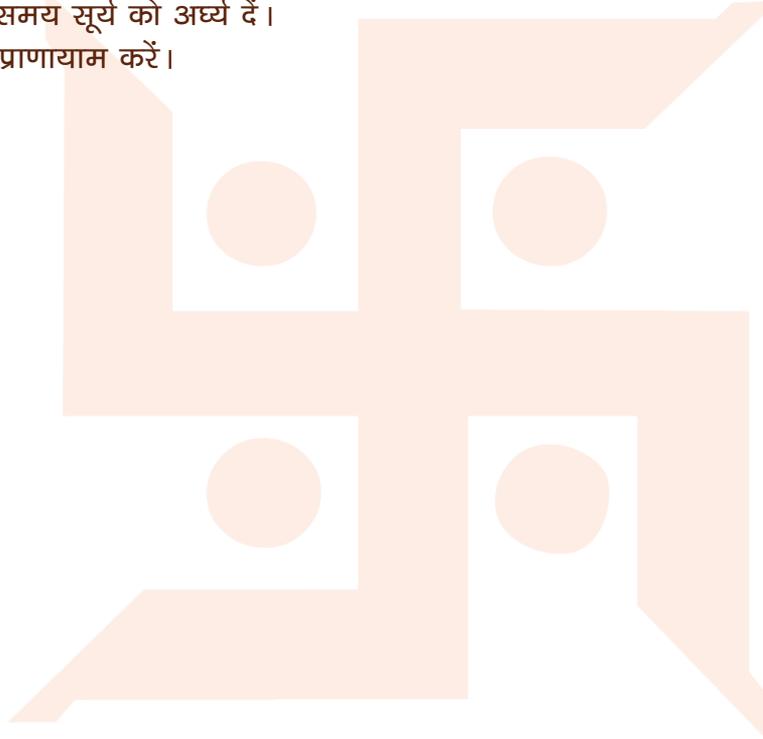
flairknowledge@gmail.com

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्न करेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वैदिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रुकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते हैं।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पत्ति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दूर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान हैं उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE
Upanagar, Nashik - 422006
9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956
flairknowledge@gmail.com

दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र
(08/03/2018 - 08/03/2028)**

चंद्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 08/03/2018 को आरंभ और 08/03/2028 को समाप्त होगी।

चन्द्र द्वादश भाव में अवस्थित है और उसे प्रबल कर रहा है। द्वादश भाव नुकसान और विघ्न, क्षति, और अपव्यय, कड़ी मजदूरी और धोखा, उदार दान, परिवार से अलगाव, छिपे दुश्मन, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, घोटाला, अपमान तथा गुप्त दुःख का सूचक है। अतः दस वर्षों की यह अवधि मिश्रित प्रतिक्रियाओं से भरी होगी जिसमें आप उत्थान-पतन दोनों की आशा कर सकते हैं।

स्वास्थ्य :

आपका जीवन सामान्य रहेगा, किन्तु, कुछ विकृति की सम्भावना है। आपकी आँखें इस दशा में कमजोर हो सकती हैं, अतः इनकी देखभाल करें। आपका मस्तिष्क संकुचित हो सकता है जिससे आपका जीवन अन्धकारमय हो जाएगा और आप अलग-थलग पड़ जाएंगे।

अर्थ और सम्पत्ति : अर्थ की दृष्टि से यह अवधि आपके लिए सामान्य रहेगी और चन्द्र की इस दशा के दौरान आप अपनी सम्पत्तियों व बैंक बैलेंस में वृद्धि करने की स्थिति में नहीं होंगे। जहाँ-तहाँ निवेश करने के प्रति सावधानी बरतें, इससे इस दशा में नुकसान हो सकता है।

व्यवसाय :

आप अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट रहेंगे और व्यवसाय में परिवर्तन के लिए स्थान बदल सकते हैं। मार्गदर्शन प्राप्त करने तथा नये व्यवसाय आरम्भ के क्रम में आप कहीं दूर भी जा सकते हैं। अपने सभी सौदों में सावधानी बरतें क्योंकि आप जो भी नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे उसमें नुकसान हो सकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन-साथी आपके सहायक होंगे और आप अपने पारिवारिक जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सौहार्दपूर्ण होगा। आपके बच्चे सहायक और आज्ञाकारी होंगे और परिवार में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करेंगे। किन्तु इस दशा में बीमारी तथा अन्य विषयों पर अत्यधिक व्यय होगा। आप धार्मिक कार्यों पर भी व्यय करेंगे।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

**अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
(07/06/2025 - 06/01/2026)**

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 08/03/2018 को प्रारंभ हुई ओर 08/03/2028 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 07/06/2025 को प्रारंभ होकर 06/01/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली में लग्न को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में दांपत्य संबंधों में कुछ कष्ट हो सकता है। आपकी वासना में वृद्धि के कारण जीवनसाथी रुष्ट हो सकते हैं। चरित्र में गिरावट न आने दें। अपमान और वीर्यशक्ति में हास के संकेत है। अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र
(06/01/2026 - 07/09/2027)**

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 08/03/2018 को प्रारंभ होकर 08/03/2028को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 06/01/2026 को प्रारंभ होकर 07/09/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

इस अवधि में आपकी सैलानी प्रवृत्ति प्रबल रहेगी। इससे बहुत से मित्र बनेंगे और लोकप्रियता बढ़ेगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से भी संबंध प्रगाढ़ होंगे। सुख-सुविधाएं भरपूर रहेंगी। धन का लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

**महादशा :- मंगल
(08/03/2028 - 08/03/2035)**

मंगल की महादशा 08/03/2028 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 08/03/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम ओर सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मों आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्योग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी। आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएं होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएं होंगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में

कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।



FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(08/03/2028 - 04/08/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 08/03/2028 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 08/03/2028 को प्रारंभ होकर 04/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप धनी, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। जीवन में खुशियां रहेंगी। आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। संतान सुखकारी होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप शक्तिशाली और सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा, मगर खर्चे भी बढ़ेंगे। कटु वचन बोलने से बचें।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा; जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम करना होगा; उन्हें छोटी-मोटी बीमारियों से बचाव करना चाहिए। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। भाई-बहन धन कमाएंगे; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी; परीक्षा में सफल होंगे, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, हाथ-पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। मंगल के गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(04/08/2028 - 22/08/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 08/03/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 04/08/2028 को प्रारंभ होकर 22/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं, लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। विदेश से व्यापारिक संबंध हो सकते हैं; व्यापार संबंधी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। जीवनसाथी और साझेदार से मधुर संबंध बनाए रखने के लिए सावधानी की आवश्यकता है। अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के धन में वृद्धि

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

होगी; उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपकी माता तीर्थयात्रा कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों को धन का लाभ होगा; उन्हें धनार्जन के बहुत से अवसर मिलेंगे। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे; लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

आपकी संतान को भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो उच्चपद और धन प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो शुत्रों से सावधान रहें, वे आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारी अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

ॐ रां राहवे नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(22/08/2029 - 29/07/2030)**

आपकी मंगल की महादशा 08/03/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/08/2029 को प्रारंभ होकर 29/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको घरेलू सुख मिलेगा। धन और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। भूमि से आमदनी अच्छी होगी। अदालत में जायदाद संबंधी मुकदमे में जीत होगी। शिक्षा के लिए समय अच्छा है। निवास बदलने के लिए समय शुभ है। सरकार से फ़ायदा हो सकता है। उत्तम कार्यक्षमता और परिश्रम के लिए प्रसिद्ध होंगे। धन और जायदाद की अचानक प्राप्ति हो सकती है। शत्रुओं पर विजय होगी। यात्रा हो सकती है। आध्यात्मिकता की ओर रुझान होगा।

आपके जीवनसाथी की किस्मत चमकेगी। धन प्राप्त करेंगे, व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता के जीवन में अचानक परिवर्तन हो सकता है या धन कमाएंगे। माता भाग्यशाली होंगी। आपके भाई-बहन धन प्राप्त करेंगे, उत्तम वस्त्र और भोजन का सुख होगा, कार्यों में सफल होंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा और धनसंचय की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति या वांछित तबादले का संकेत है। परामर्शदाताओं को कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा मगर बदपरहेजी न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(29/07/2030 - 07/09/2031)**

आपके लिए मंगल की महादशा 08/03/2028 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/07/2030 को प्रारंभ होकर 07/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपकी योग्यता की प्रशंसा होगी, प्रोन्नति हो सकती है। उच्च पद मिल सकता है। आप महत्वाकांक्षी और कूटनीतिज्ञ रहेंगे और सम्मान प्राप्त करेंगे। यात्राएं हो सकती हैं और विदेश से लाभ संभव है। विवाह हो सकता है। आप प्रत्येक कार्य में धैर्य और सावधानी का परिचय देंगे। सुविधाओं में वृद्धि होगी, अचल संपत्ति प्राप्त होगी। माता के साथ संबंध उत्तम रहेंगे। घर में शांति रहेगी।

आपके जीवनसाथी को धन और उच्चपद की प्राप्ति होगी। व्यापार के लाभ में वृद्धि होगी। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी, वाहन सुख, सफलता और धन का संकेत है। आपकी माता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी, सब सुविधाएं रहेंगी, जायदाद से आमदनी होगी। आपके भाई-बहन बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश से लाभार्जन करेंगे। बड़े भाई-बहनों की यात्रा होगी, संतान से सुख मिलेगा।

आपकी संतान को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाता और व्यापारी अधिक सक्रिय होंगे, लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। खानपान में परहेज रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ढोजतवैतपदहेण्चसंदमजडंदजतैउंसस;6द्धझ

FLAIR KNOWLEDGE

ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE

Upanagar, Nashik - 422006

9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956

flairknowledge@gmail.com